ALL INDIA BANK EMPLOYEES' ASSOCIATION

Central Office: "PRABHAT NIVAS" Regn. No. 2037
Singapore Plaza, 164, Linghi Chetty Street, Chennai-600 001
Phone: 2535 1522 Web: www.aibea.in
e mail : chv.aibea@gmail.com **&** aibeahq@gmail.com

सर्क्युलर नम्बर. **28/448/2022/19** **23-3-2022**

सभी यूनियनों और सदस्यों के लिए:

प्रिय साथियों,

30 साल में 50 हड़ताल
नव-उदारवादी आर्थिक नीतियों और प्रतिगामी बैंकिंग सुधारों के खिलाफ
इन जनविरोधी, मजदूर विरोधी नीतियों के खिलाफ संघर्ष जारी रखें
28 और 29 मार्च को देशव्यापी हड़ताल को सफल बनाने के लिए आगे बढ़ें

स्पष्ट आह्वान: हमारे देश का मजदूर वर्ग **28** और **29** मार्च, **2022** को देशव्यापी हड़ताल में उतरने की तैयारी कर रहा है। हड़ताल को व्यापक रूप से सफल बनाने के लिए ट्रेड यूनियन कमर कस रहे हैं। उम्मीद है कि 20 करोड़ से अधिक श्रमिक - संगठित श्रमिक और असंगठित श्रमिक दोनों हड़ताल में शामिल होंगे। इस हड़ताल में भाग लेने के लिए मज़दूरों के नए विभाग आगे आ रहे हैं।

AIBEA **गर्व से जुड़ रहा है:** हमें गर्व है कि **AIBEA** ने भी आह्वान किया है और सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों, निजी क्षेत्र के बैंकों, विदेशी बैंकों, सहकारी बैंकों और क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों में हमारे सभी सदस्य हमारे देश के करोड़ों श्रमिकों के साथ सरकार की जन-विरोधी और श्रम-विरोधी नीतियों के खिलाफ अपना विरोध प्रकट करेंगे।

मजदूर विरोधी नीतियों के खिलाफ लड़ना - हमारा प्रमुख कर्तव्य: जब से 1991 में तत्कालीन नरसिम्हा राव सरकार द्वारा नई आर्थिक नीतियां शुरू की गईं, AIBEA सबसे आगे रहा है और इन प्रतिगामी नीतियों का विरोध करने के लिए सभी संघर्षों का हिस्सा रहा है। पिछले 3 दशकों से हम लगातार इन नीतियों का विरोध कर रहे हैं क्योंकि हमारा स्पष्ट विचार है कि ये नीतियां मजदूरों और आम जनता के हित में नहीं हैं, बल्कि ये नीतियां उनके हितों पर प्रतिकूल प्रभाव डालती हैं।

AIBEA का मानना है कि सरकार की जनविरोधी और मजदूर विरोधी नीतियों के खिलाफ लड़ना हमारे ट्रेड यूनियनों का सर्वोपरि कर्तव्य है और यही कारण है कि हम हमेशा केंद्र में आनेवाली क्रमिक सरकारों के खिलाफ इन संघर्षों का एक अविभाज्य हिस्सा रहे हैं।

कामगारों का उद्देश्य एक राजनीतिक कार्य है: ऐसे विचार और आलोचनाएँ रही हैं और अब भी हैं कि ये संघर्ष प्रकृति में राजनीतिक हैं और इसलिए यूनियनों को इस तरह की हड़ताल की कार्रवाइयों से दूर रहने की आवश्यकता है। लेकिन AIBEA का मानना है कि यह ट्रेड यूनियनों की जिम्मेदारी है कि जब भी किसी सरकार की कोई नीति श्रमिकों के हितों को प्रभावित करती है, तो श्रमिकों के हितों की हिमायत करें। यही कारण है कि हर सरकार के खिलाफ जब भी वह मजदूर विरोधी कदम उठाती है, AIBEA हड़ताल पर चली जाती है।

सार्वजनिक क्षेत्र विकास का मुख्य इंजन है: AIBEA का दृढ़ विचार है कि भारत जैसी विकासशील अर्थव्यवस्था में, सार्वजनिक क्षेत्र को व्यापक-आधारित विकास को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभानी है। इसीलिए AIBEA ने बैंकों के राष्ट्रीयकरण के लिए लड़ाई लड़ी थी और 1969 में इसे हासिल करने में वह सफल रहा। पिछले तीन दशकों से, AIBEA बैंकों के निजीकरण के उद्देश्य से बैंकिंग सुधारों का लगातार विरोध कर रहा है। सार्वजनिक क्षेत्र देश की मदद करता है जबकि निजी क्षेत्र मालिक की जेब भरता है।

बेरोजगारों के लिए अधिक नौकरियों के लिए लड़ना यूनियन का काम है: AIBEA इस बात से अवगत है कि हमारे देश में, जहां बेरोजगारी का स्तर बहुत अधिक है और जहां श्रमिकों का जीवन स्तर इतना ऊंचा नहीं है, वहां नौकरी और नौकरी की सुरक्षा बहुत महत्वपूर्ण है। हम सभी जानते हैं कि 1969 में, बैंक कर्मचारियों की संख्या एक लाख से भी कम थी और राष्ट्रीयकरण और शाखा विस्तार के कारण, आज हमारे पास लगभग 10 लाख बैंक कर्मचारी हैं। हमें अपने बेरोजगार युवाओं को रोजगार प्रदान करने के लिए सार्वजनिक क्षेत्र की आवश्यकता है। इसलिए AIBEA का मानना है कि हमें निजीकरण का विरोध करने के लिए इन संघर्षों में आगे होना चाहिए क्योंकि निजीकरण नौकरियों और नौकरी के अवसरों को प्रभावित करेगा। AIBEA हमेशा बेरोजगार युवाओं के लिए अधिक नौकरियों की मांग करनेवाले आम संघर्षों का समर्थन करेगा।

संगठित नहीं लड़ते, तो असंगठितों के लिए कौन लड़ेगा? AIBEA का यह भी मानना है कि संगठित कामगार असंगठित कामगारों के शोषण से बेखबर नहीं रह सकते। बैंक कर्मचारी सुरक्षित और संरक्षित हैं क्योंकि हम शक्तिशाली AIBEA के तहत ट्रेड यूनियनों में संगठित हैं। लेकिन क्या हम असंगठित कामगारों, ठेका मजदूरों और आउटसोर्स कर्मचारियों की समस्याओं को नज़रअंदाज कर सकते हैं? वे कम वेतन, उचित सेवा शर्तों की कमी, अपरिभाषित काम के घंटे और नौकरी की असुरक्षा से पीड़ित हैं। जब इन मुद्दों पर एक आम संघर्ष होता है, तो उसमें भाग लेना हमारा कर्तव्य है।

संविदा कर्मचारियों के लिए नियमित कर्मचारियों को लड़ना पड़ता है: सरकार की नीति और प्रोत्साहन के कारण नियोक्ता नियमित नौकरियों के बजाय अधिक से अधिक आउटसोर्सिंग कर रहे हैं। ये कर्मचारी बहुत शोषित हैं और वे अधिकांश श्रम कानूनों के दायरे में नहीं आते हैं। हमारे बैंकिंग क्षेत्र में भी इनकी संख्या बढ़ रही है। 4,70,000 बिजनेस कॉरेस्पोंडेंट हैं। ऐसे अन्य

भी हैं जो संविदा कर्मचारी हैं या कंपनी के लागत (cost to company) के आधार पर नियुक्त हैं। वे वही काम करते हैं जो हम करते हैं लेकिन उन्हें उतना वेतन नहीं मिलता जितना हमें मिलता है। उनके लिए हम नहीं तो कौन लड़ेगा? इस हड़ताल कॉल में यह महत्वपूर्ण मांगों में से एक है।

आज के लिए लड़ो, कल के लिए लड़ो - नयी पेन्शन योजना (NPS) ख़ारिज करो: निस्संदेह हमारी वर्तमान जरूरतों के लिए लड़ना बहुत जरूरी है। लेकिन ट्रेड यूनियनों को श्रमिकों की भविष्य की जरूरतों को ध्यान में रखना होगा। जब हम भविष्य की बात करते हैं तो महंगाई से जुड़ी पेन्शन बहुत महत्वपूर्ण होती है। इसलिए युवा कर्मचारियों के लिए NPS को खत्म करने और DA से जुड़ी पेन्शन की बहाली की मांग एक महत्वपूर्ण मांग है। दो दिन की इस हड़ताल में यह अहम मांग है।

इस प्रकार 28 और 29 मार्च को 2 दिन की यह हड़ताल हमारे सामने एक महत्वपूर्ण हड़ताल है। हर मुद्दा हमारे लिए प्रासंगिक है। आइए इसे एक शानदार सफलता बनाएं।

अभिवादन के साथ,

आपका साथी,

सी.एच. वेंकटचलम महासचिव

1991 में आर्थिक उदारीकरण के एजेंडे को जारी किए जाने के बाद से नव-उदारवादी आर्थिक नीतियों, मजदूर विरोधी श्रम नीतियों और प्रतिगामी बैंकिंग सुधारों आदि के खिलाफ बैंक कर्मचारियों की 50 हड़तालें और 30 साल का देशभक्तिपूर्ण संघर्ष

1.	**29-11-1991**	आर्थिक सुधारों, निजीकरण, मूल्य वृद्धि के खिलाफ
2.	**16-09-1992**	सरकार की आर्थिक सुधार नीतियों के खिलाफ
3.	**09-09-1993**	सरकार की आर्थिक सुधार नीतियों के खिलाफ
4.	**17-02-1994**	निजीकरण, शाखा बंद करने के खिलाफ, नौकरी और नौकरी की सुरक्षा के लिए
5.	**08-04-**	जनविरोधी आर्थिक नीतियों के खिलाफ

	1994	
6.	**11-05-1994**	बैंकों में पूंजी के विनिवेश पर विधेयक के खिलाफ
7.	**29-09-1994**	नई आर्थिक नीतियों के खिलाफ
8.	**04-07-1997**	स्थानीय क्षेत्र के निजी बैंकों के खिलाफ
9.	**28-08-1997**	स्थानीय क्षेत्र के निजी बैंकों के खिलाफ
10.	**29-08-1997**	स्थानीय क्षेत्र के निजी बैंकों के खिलाफ
11.	**11-12-1998**	जनविरोधी आर्थिक नीतियों के खिलाफ
12.	**11-05-2000**	जनविरोधी आर्थिक नीतियों के खिलाफ
13.	**15-11-2000**	बैंकों के निजीकरण के कदमों के खिलाफ
14.	**21-12-2000**	संसद में पेश हुआ निजीकरण के खिलाफ बिल
15.	**16-04-2002**	गलत आर्थिक नीतियों और सार्वजनिक उपक्रमों के निजीकरण के खिलाफ
16.	**21-05-2003**	गलत आर्थिक नीतियों और सार्वजनिक उपक्रमों के निजीकरण के खिलाफ
17.	**23-02-2004**	गलत आर्थिक नीतियों और सार्वजनिक उपक्रमों के निजीकरण के खिलाफ
18.	**22-03-2005**	बैंकों के विलय, तथा BR एक्ट में संशोधन आदि के खिलाफ
19.	**29-09-2005**	प्रतिगामी आर्थिक नीतियों के खिलाफ
20.	**28-07-2006**	आउटसोर्सिंग और बैंकिंग विनियमन अधिनियम में बदलाव के खिलाफ
21.	**27-10-2006**	बैंकिंग सुधारों के खिलाफ और भर्तियों की मांग ले कर

22.	**14-12-2006**	मजदूर विरोधी श्रम नीतियों के खिलाफ
23.	**25-01-2008**	बैंकों के विलय के खिलाफ और एक और विकल्प की मांग
24.	**20-08-2008**	बैंकों के विलय के खिलाफ और एक और विकल्प की मांग
25.	**24-09-2008**	बैंकों के विलय के खिलाफ और एक और विकल्प की मांग
26.	**25-09-2008**	बैंकों के विलय के खिलाफ और एक और विकल्प की मांग
27.	**16-12-2009**	बैंकों के विलय और बैंकों के निजीकरण के खिलाफ
28.	**07-09-2010**	कीमतों की वृद्धि, विनिवेश और ऐसी आर्थिक नीतियों के खिलाफ

29.	**05-08-2011**	खंडेलवाल की सिफारिशों और आउटसोर्सिंग के खिलाफ
30.	**28-02-2012**	कीमतों की वृद्धि, निजीकरण, श्रम कानून और बैंकिंग सुधार आदि के खिलाफ
31.	**23-08-2012**	बैंकिंग क्षेत्र पर हमलों और बैंकिंग कानून संशोधन के खिलाफ
32.	**24-08-2012**	बैंकिंग क्षेत्र पर हमलों और बैंकिंग कानून संशोधन के खिलाफ
33.	**20-12-2012**	बैंकिंग कानून संशोधन विधेयक पेश करने के खिलाफ
34.	**20-02-2013**	बैंकों में पूंजी के विनिवेश, श्रम कानून में बदलाव आदि के खिलाफ
35.	**21-02-2013**	बैंकों में पूंजी के विनिवेश, श्रम कानून में बदलाव आदि के खिलाफ
36.	**02-09-2015**	लोक-विरोधी, मजदूर-विरोधी, किसान-विरोधी नीतियों के खिलाफ
37.	**08-01-2016**	सहयोगी (एसोसिएट) बैंकों में सामूहिक सौदेबाजी के अधिकार पर हमलों के खिलाफ

38.	**29-07-2016**	बैंकिंग क्षेत्र के सुधारों के खिलाफ
39.	**02-09-2016**	बैंकों के विलय, श्रम सुधार, फंसे कर्ज आदि के खिलाफ
40.	**28-02-2017**	बैंकिंग क्षेत्र के सुधारों के खिलाफ
41.	**22-08-2017**	बैंकिंग क्षेत्र के सुधारों के खिलाफ
42.	**26-12-2018**	बैंकों के विलय के खिलाफ
43.	**08-01-2019**	गलत आर्थिक नीतियों, श्रम कानून में बदलाव, निजीकरण के खिलाफ
44.	**09-01-2019**	गलत आर्थिक नीतियों, श्रम कानून में बदलाव, निजीकरण के खिलाफ
45.	**26-10-2019**	बैंक ऑफ बड़ोदा, देना बैंक और विजया बैंक के विलय के खिलाफ
46.	**26-11-2020**	गलत आर्थिक नीतियों, श्रम कानून में बदलाव, निजीकरण के खिलाफ
47.	**15-03-2021**	2 बैंकों के निजीकरण की बजट घोषणा के खिलाफ
48.	**16-03-2021**	2 बैंकों के निजीकरण की बजट घोषणा के खिलाफ
49.	**16-12-2021**	बैंकिंग कानून संशोधन विधेयक, 2021 के खिलाफ
50.	**17-12-2021**	बैंकिंग कानून संशोधन विधेयक, 2021 के खिलाफ

वर्ष	इतने दिनों की हड़ताल	वर्ष	इतने दिनों की हड़ताल
1991	**1**	**2009**	**1**
1992	**1**	**2010**	**1**
1993	**1**	**2011**	**1**
1994	**4**	**2012**	**4**
1997	**3**	**2013**	**2**
1998	**1**	**2015**	**1**
2000	**3**	**2016**	**3**
2002	**1**	**2017**	**2**
2003	**1**	**2018**	**1**

2004	**1**	**2019**	**3**
2005	**2**	**2020**	**1**
2006	**3**	**2021**	**4**
2008	**4**	**1991 - 2021**	**50** दिन

मार्च 28 और 29 मार्च, 2022 को व्यापक हड़ताल पर